एवरशाइन

रत्नमाला

(राष्ट्रीय पाठ्यचर्चा की रूपरेखा पर आधारित हिंदी पाठ्य पुस्तक)

भाग-8

डा० सुखपाल सिंह

एम. ए. (हिंदी, अंग्रेजी)

पी-एच. डी. (हिंदी)

साहित्यरत्न (संस्कृत)

एवरशाइन पब्लिशर्ज़

Mobile No. : 9560408043, 9868877950, Fax : 28112353

E-Mail : evershinepub@gmail.com

इस पुस्तक का कोई भी अंश तथा चित्र किसी भी प्रकार से उद्धृत करना सर्वथा वर्जित है ।
इस पुस्तक की कुंजी, गाइड अथवा किसी भी प्रकार की सहायक पुस्तक छापना वर्जित है ।

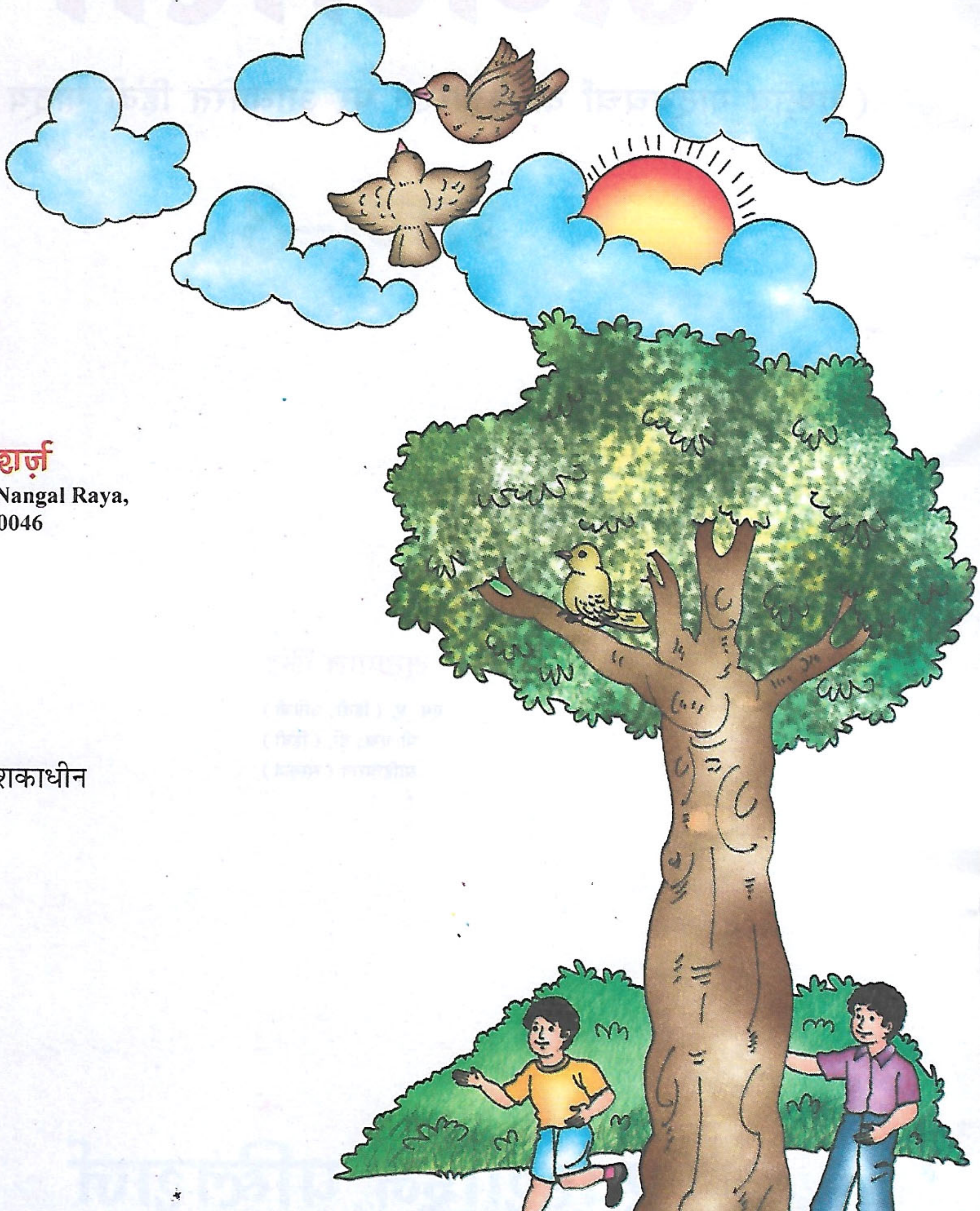

प्रकाशक :

एवरशाइन पब्लिशर्ज़
Soni House, WZ-348, Nangal Raya,
New Delhi-110046

© सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

कला सज्जा :

जैन कंप्यूटर्स

प्राक्कथन

यह पुस्तकमाला 'एवरशाइन रत्नमाला' राष्ट्रीय पाठ्यचर्चा की रूपरेखा के आधार पर तैयार किए गए पाठ्यक्रम पर आधारित है । राष्ट्रीय पाठ्यचर्चा की नई रूपरेखा में बच्चे को पाठ्यक्रम के हर विषय से जोड़कर देखा गया है, इसीलिए इस पुस्तकमाला की पाठ्य सामग्री का चयन करते समय बच्चे के भाषायी विकास की समग्रता को ध्यान में रखा गया है, साथ ही बच्चों की बौद्धिक क्षमता, रुचि और उनके लिए उपयोगिता को भी पर्याप्त महत्व दिया गया है । पाठों के चयन में केंद्रीय शिक्षा सुझावों पर आधारित विषयों पर विशेष ध्यान दिया गया है । पुस्तकमाला को विविधतापूर्ण और रोचक बनाने के लिए गद्य की विभिन्न विधाओं जैसे निबंध, कहानी, जीवनी, संस्मरण; एकांकी, यात्रा वृत्तांत, उपन्यास अंश आदि पर आधारित पाठ सम्मिलित किए गए है । साथ ही देश प्रेम, नीति, कर्तव्य भावना और प्राकृतिक सौंदर्य से परिपूर्ण कविताएँ भी दी गई हैं । बच्चों को कविता की आधुनिक रचना शैली से परिचित कराने के लिए नई कविता के पाठ भी दिए गए हैं, जिससे साहित्य की समग्रता के प्रति बच्चों की रुचि बढ़े और उनके ज्ञान एवं ग्रहण कौशल का विकास हो सके ।

पाठों को अच्छी तरह हृदयंगम कराने के लिए प्रत्येक पाठ के अंत में विस्तृत अभ्यास प्रश्न दिए गए हैं । 'बोध और विचार' के अंतर्गत पठित विषय वस्तु को समझने और उस पर विचार करने की योग्यता उत्पन्न करने से संबंधित प्रश्न सम्मिलित किए गए हैं । 'भाषा और व्याकरण' के अंतर्गत भाषा कौशल, वाक्य विन्यास, वाक्य रचना संबंधी प्रश्न दिए गए हैं । 'योग्यता विस्तार' के अंतर्गत ऐसे क्रिया कलाप दिए गए हैं, जो बच्चों में बोलने, सुनने, पढ़ने और लिखने की क्षमता का विकास कर सकें । प्रत्येक पाठ के अंत में 'शब्द कोश' भी दिया गया है, जिसमें पाठ में आए कठिन शब्दों के शब्दार्थ और प्रसंगगत अर्थ बताए गए हैं ।

इस पुस्तकमाला में जिन लेखकों और कवियों की रचनाओं को सम्मिलित किया गया है, उनके प्रति हम हृदय से आभार प्रकट करते हैं । पुस्तक में संशोधनार्थ दिए गए आपके अमूल्य सुझावों का हम सहर्ष स्वागत करेंगे । आशा है, पूर्व की भाँति आपका सहयोग हमें निरंतर मिलता रहेगा ।

– लेखक एवं प्रकाशक

पाठ क्रम

	पाठ	विधा	पृष्ठ
1.	उठो धरा के अमर सपूतो	कविता	5
2.	परीक्षा	कहानी	8
3.	प्रेम, अहिंसा और बंधुत्व	व्याख्यान	13
4.	एक टोकरी भर मिट्टी	कहानी	17
5.	जलाओ दिये	कविता	21
6.	अध्ययन	निबंध	24
7.	महाभारत	पौराणिक कथा	28
8.	तीन प्रश्न	कहानी	34
	जाँच पत्र – 1		39
9.	चंद्रशेखर आजाद	जीवनी	40
10.	पहलवान की ढोलक	कहानी	46
11.	चंद्रगुप्त	नाटक अंश	52
12.	गिल्लू	रेखाचित्र	57
13.	नमक की मिठास	कहानी	62
14.	शुरू के आदमी	पत्र	68
15.	पहरुए सावधान रहना	कविता	73
16.	रानी का अंतिम युद्ध	उपन्यास अंश	76
	जाँच पत्र – 2		83
17.	सुनहरे पल	संस्मरण	84
18.	मैं कवि कैसे बना	हास्य-व्यंग्य	88
19.	जिंदगी का असली मजा	ललित निबंध	94
20.	बहू की विदा	एकांकी	99
21.	प्रियतम	कविता	107
22.	मुझसे सब अच्छे	निबंध	112
23.	धरती का स्वर्ग	यात्रा वृत्तांत	117
24.	पर्यावरण प्रदूषण	निबंध	122
	जाँच पत्र – 3		128
	रचनात्मक एवं योगात्मक मूल्यांकन (सी सी ई पाठ्यक्रम पर आधारित)		129

1

उठो धरा के अमर सपूतो

इस कविता के रचयिता श्री द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी का बाल साहित्य के रचनाकारों में महत्वपूर्ण स्थान है । आपने देश प्रेम, राष्ट्रीय एकता और नैतिक मूल्यों से संबंधित अनेक कविताओं की रचना की है । इस कविता में आपने नवयुवकों को नव निर्माण के लिए प्रेरित किया है ।

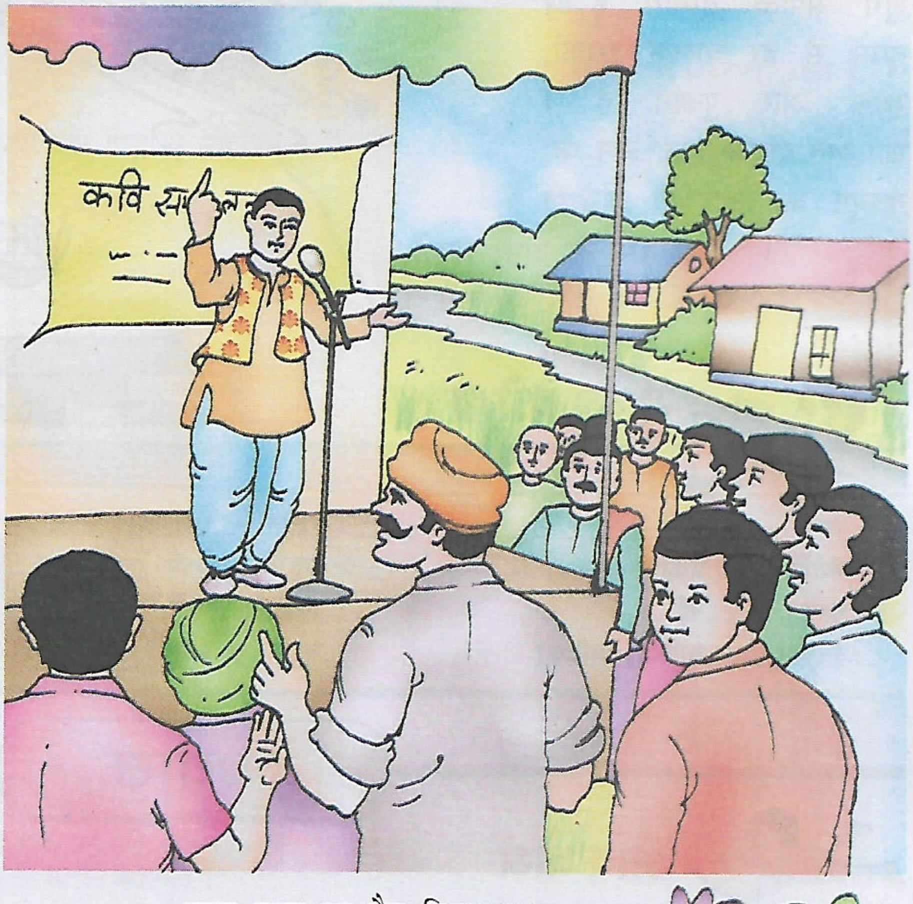

उठो, धरा के अमर सपूतो,
पुनः नया निर्माण करो ।
जन-जन के जीवन में फिर से
नव स्फूर्ति, नव प्राण भरो ।

नया प्रात है, नई बात है
नई किरन है, ज्योति नई ।
नई उमंगें, नई तरंगें,
नई आस है, साँस नई ।
युग-युग के मुरझे सुमनों में,
नई-नई मुस्कान भरो ।
उठो, धरा के अमर सपूतो,
पुनः नया निर्माण करो ।

डाल-डाल पर बैठ विहग कुछ
नए स्वरों में गाते हैं ।
गुन-गुन, गुन-गुन करते भौंरे
मस्त उधर मँडराते हैं ।
नवयुग की नूतन वीणा में,
नया राग, नव गान भरो ।
उठो, धरा के अमर सपूतो,
पुनः नया निर्माण करो ।

कली-कली खिल रही इधर,
वह फूल-फूल मुस्काया है ।
धरती माँ की आज हो रही,
नई सुनहरी काया है ।
नूतन मंगलमय ध्वनियों से,
गुंजित जग उद्यान करो ।
उठो, धरा के अमर सपूतो,
पुनः नया निर्माण करो ।

सरस्वती का पावन मंदिर,
शुभ संपत्ति तुम्हारी है ।
तुममें से हर बालक इसका,
रक्षक और पुजारी है ।
शत-शत दीपक जला ज्ञान के,
नवयुग का आह्वान करो ।
उठो, धरा के अमर सपूतो,
पुनः नया निर्माण करो ।

शब्द कोश

धरा	=	पृथ्वी	रक्षक	=	रक्षा करने वाला	पावन	=	पवित्र
ज्योति	=	प्रकाश	स्फूर्ति	=	फुर्ती, तेजी, उमंग	आह्वान	=	आमंत्रण, बुलावा
नूतन	=	नई	विहग	=	पक्षी	शत	=	सौ
उद्यान	=	बगीचा, वाटिका	काया	=	शरीर			

अभ्यास

भाव बोध

(क) लिखित प्रश्न

1. 'धरा के अमर सपूतो' से कवि का क्या तात्पर्य है ?
2. 'नया निर्माण' से आप क्या समझते हैं ?
3. कवि प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में क्या भर देना चाहता है ?
4. कवि ने सरस्वती के पावन मंदिर का रक्षक किसे बताया है ?
5. कवि ने नवयुग का आह्वान किस प्रकार करने को कहा है ?

(ख) निम्नलिखित पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए –

1. जन-जन के जीवन में फिर से नव स्फूर्ति, नव प्राण भरो ।

2. युग-युग के मुरझे सुमनों में, नई-नई मुस्कान भरो ।

3. नूतन मंगलमय ध्वनियों से, गुंजित जग उद्यान करो ।

(ग) निम्नलिखित शब्दों के तत्सम रूप लिखिए –

प्रात	किरन	आस ....
साँस	भौंरा	माँ ....

(घ) 'अमर सपूत' में 'अमर' विशेषण है और 'सपूत' विशेष्य । विशेषण जिसकी विशेषता बताता है, उसे विशेष्य कहते हैं ।

अब निम्नलिखित शब्द समूहों में विशेषण और विशेष्य छाँटकर लिखिए –

शब्द समूह	विशेषण	विशेष्य
नया निर्माण		
मुरझे सुमन		
मस्त भौंरे		
नूतन वीणा		
मंगलमय ध्वनि		
शुभ संपत्ति		

(ङ) कविता से छाँटकर वे शब्द लिखिए, जिनकी आवृत्ति हुई है; जैसे 'जन-जन' –

योग्यता विस्तार

इस कविता को कंठस्थ करके कक्षा में सस्वर वाचन कीजिए ।